

वामे लघु श्री
बन्धरा श्री
चंपट श्री
जिते देवदत्तः
सत्यं

ॐ ह्रीं श्रीं

श्री देवदत्तः



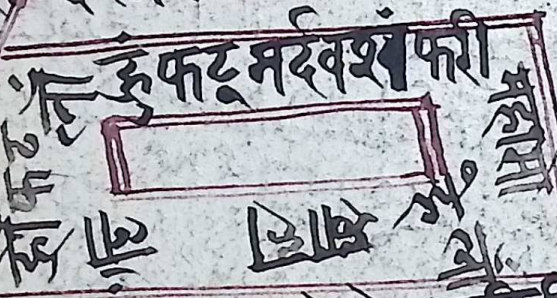
तमाक्षरीने भूर्य
यस्य नाम लि
ख्य कंठ वधा
सौभाग्य भव
तिः

कुंकमा दिनाष्ट
लिय्य बाहो
त चतु
गे नश

सूर्य नाम
धारय
जं जं
देवदत्त
जं जं
ययययय

ॐ ह्रीं श्रीं

इदं जंत्रमर्दवश्य कारिका



अष्टगंधे भूर्य
यस्य नाम लि
ख्य कंठ वधा
सौभाग्य भव
तिः



गारायनादि लि
ख्य कंठ वधा
सौभाग्य भव
तिः

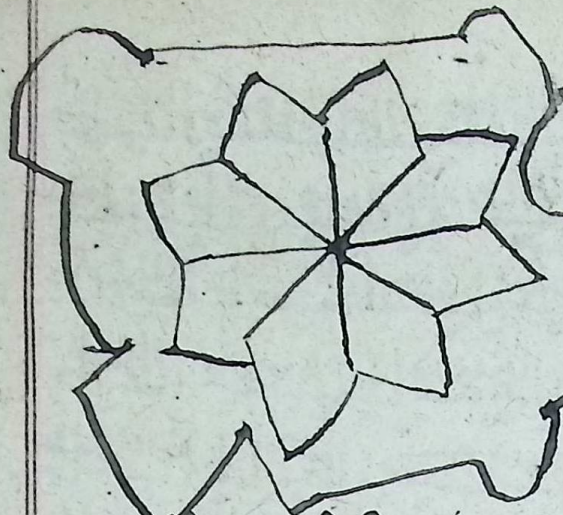
अष्टगंधे भूर्य
यस्य नाम लि
ख्य कंठ वधा
सौभाग्य भव
तिः



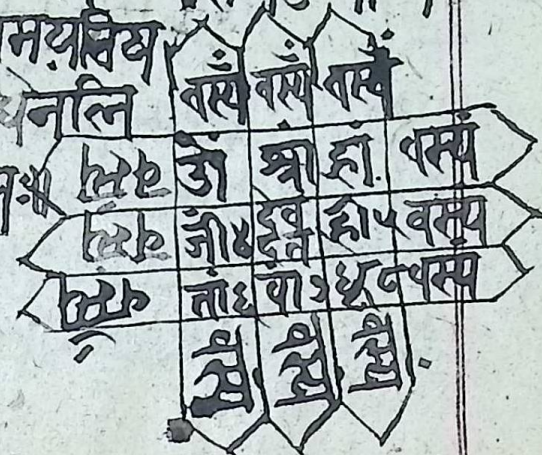
ॐ नमो रुद्राय महासाय शमदाय महाबलवाय पराक्रमाय
 महारौद्रांतकाय रोद्राय महाकपायवेनमः ॐ जंभतेनमः माह
 उद्ध ॐ ॐ ॐ ॐ नेनमः ॐ नाथवेनमः वालकस्य सूर्य वारयुनामधीयननक्षत्र
 न चिरज्यंभूर्य लिख्य दुष्टनिवारयति अथ द्वितीय जत्रलिः
 नारीरक्तचलावरा चक्रपाञ्चक करणोपिरोनोदरा सत्य
 ॐ गुरुसुगुरु सत्तगुरमनारः प्रथम श्रीरामचंद्रकोणारं हनमेन
 अजनीके पूतजानेः कपड पछाडे तीन सैय सठभूतः भूत भूत कीजात
 वधानुः आकासरः मकसर कयीया मसानः इहांक मारत गरदीया मसा
 नः ॐ हारिचली भरीचलीः भीमकी गदाचलीः अर्जनके वानचलेः सीताको सतचलेः
 सहदेवकी पाथीचलेः गमारी कुल्लारीको चकचलेः पीठेवठ मंदोदरीचलेः डोलावेठ
 रामनचले एकनसां रेकला विरहनमतः अजनीके पूत हांक मारतूले चल्पोः कानको



नकोंलेचल्याः हवित वंदी चारलचली पछीत वंदी डंकरी चलीः सैयरी चलीः रक्ता
 चलीः मसानी चलीः सुर्यरी चलीः दवा चलीः फिपरा चलीः करजा चलिः हनुमंत
 अजनी के पूत हांक हमार तुलेचल्याः कौन कौन कौलेचल्याः आकास परी कौलेच
 ल्याः पाताल परी कौलेचल्याः मान परी कौलेचल्याः म्याम परी कौलेचल्याः इंदु परी कौ
 लेचल्याः लोलि परी कौलेचल्याः वैरी परी कौलेचल्याः हनुमंते अजनी के पूत हांक हमार
 तुलेचल्याः कौन कौन कौलेचल्याः वामन से भरो चलेः चौसठ योगरी चलेः होरे दीये वा
 डी में छतिका कवाडी में बोटी बोटी मेंः हाड हाड मेंः चांव चाव मेंः गूद गूद मेंः नौवना
 री वरुतर कोठे मेंः ये ये हनुमंत अजनी के पूतः हांक हमार तुलेचल्याः कौन कौन कौले
 चल्याः रुद्र पटकों राहकों वाटकों गलिकों कों चकोंः छुडी कों मको लिकोंः रुखकों
 वृषकोंः नदी को नाल कोः खुकों वाये कों तलाये कोंः कोपकोंः जातकोंः प्रजातकोंः ठने
 कोंः ठने कोंः टोना कोंः कर्कोः कर्तुकों हनुमंत अजनी के पूतः वारा कास के पछाडीः
 चौविम कोस की गीद धरमार उलटत वेद पलटत कायाः श्री सीता पती राम जी सस हायाः



मध्येवासुदेवायनमः महालक्ष्मणेनमः ॥ यत्नमहा
 लक्ष्मीवासुदेवाभ्यांनमः ॥ अष्टततो अष्टपत्रे सुभ
 शयै नमः ॥ अक्षरो नमः ॥ सुरभे नमः ॥ सूर्याय नमः ॥ धे
 नवे नमः ॥ बहुरूपाय नमः ॥ पृथिव्यै नमः ॥ अनंताय नमः ॥
 विष्णुरूपाय नमः ॥ दिग्धने नमः ॥ सिद्धे नमः ॥ अष्टो न
 मः ॥ शान्त्यै नमः ॥ गेहिनी दिग्धने नमः ॥ चंद्रमसे नमः ॥ महादेवाय नमः ॥ देव्यै नमः ॥ रक्षो
 हर्शा वल्लगहनं वैष्णवी मिदमहंतं वल्लगमुक्ती गमिस्वाहा ॥ इति पापमै नहुत्वाः ग
 वामभिधिच्यः कलशोदकेनः ॥ अविनयमविनय ॥ मनशमयविष
 रमचरेत्ना भूतदयां विस्तार तारयः ॥ भूर्य पत्रोपरि ॥ अष्टगंधनलि
 रव्यते स्त्रीधार्य्य पुर्णवस्य पुर्णधार्य्यते स्त्री वश्यम् ॥ १॥ रामः ॥



Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ॐ श्रीशंकराय नमः अथ मंत्रमुक्तावलिरव्यंते अथ सर्वव्याधिमंत्रः पहेलाना
 ब्रमांडा जिन मिमरा मभकोई हजाना ब्रमाई वापदा जिन जन्म दीया तिजाना ब्रगुरुपी
 रदा जो पारगामी होई चवथाना ब्रजा तनपा मरस्वति नग्रकोट कि राणी हुडमगडी राजेव
 रा ल्या ममुद पहिली मथनि मथ्याहीरा आया दूजी मथनि मथ्या लाल आया तीजी म
 थनी मथा मईना आया चवथी मथनी मथ्या चार वेदे आये पांचमी मथनी मथ्या पांच पांडे
 आये छठवी मथनी मथ्या लुलालु ठुठारे आये सातई मथनी मथ्या अंजे पालु आया अ
 जपाल के सात वेद पहिलि पाय वल्ल छोड मईने कोठी रुपेताला तिथे उपजि अथेतर सौफा
 डी पहिले फोडी कोरा मीयाई हांसी यांसी लोही दोही तुरकी तुरकाणी मुगली पठा
 नी ननात्री अग्रवाय रतां जुलि बभवरी चकला गलरुं रुणी वाम वरुन्हाल्ली ककरा
 क थरा ला मांड पुरा लून नमूरी पीपली कुलथी गुलटी मुराडकी ठंडी वादरी ईडे
 गीया वाय फिडंगी वावाय बरा हराका दराका नेईया चतथईया लावा ताप डवला

ॐ
मं.मु.
९

ताप भटला चटलागाथाय कमलागाय हेतवाय सेतवाय सनवाय मेघडंवारदी
वाय खट मिठेदीवाय गुड चूमलेदीवाय कमलवाय कौशामडीनेजाईजन्मी
माधेमासेजाईजन्मी मंगलेबारेजाईजन्मी वासी चौदसीयेजाईजन्मी तेरी आदजा
गा मलादजागा जठा गारुडकगाधी व्याध उत्तरे व्याधतु भलिजागा उत्तरे जेतां शिरे
वसेतां माहादेव वसे तिथेतां व्याधे वसगा नादेउ माथे वसे माथे बंदु भाव वसेतां व्याधे
वसगा नादेउ पवगा पाणी वसे माथे व्याधे वसेगा नादेउ आधी वसे अवीनयगा देवी
वसेतां व्याधे वसगा नादेउ कान वसे काने कर्णाराजा वसे उथेतां व्याधे वसगा नादेउ ना
के वसे नाके मंगलादीपकी पद्मगा वसे उथेतां व्याधे वसगा नादेउ उठे वसे उठे आ
पपद्मगा वसे उठेतां व्याधे वसगा नादेउ जिह्वा वसे जिह्वा सरस्वती वसे तिथेतां व्या
धे वसगा नादेउ दाठे वसे दाठे मार ध्वज जति वसे तिथेतां व्याधे वसगा नादेउ भोफ
रे वसे भोफरे वसेतां दाम मागीये वसे तिथेतां व्याधे वसगा नादेउ वमाडे वसे वमाडे पो रामः॥

॥१॥

रपकंवरवसेतिथेतां व्याधेवसरानादेउ अडकणीवसे अडकणी टंकी करीकी माल
 ऊपरवसे उयार समुंदे पसुंदे व्याह सामेंते ईश्वर मारीहाक हरकी भवता गुरुकी शक्त फु
 रे मंत्र ईश्वरकी वाचा ॐ आदिम गुरु तेरा नाव पवंजे वसे पवतां अर्जुन वीर वसेतिथेतां
 व्याधेवसरानादेउ हाथे वसे हाथे धर्मराजा वसेतिथेतां व्याधेवसरानादेउ पीठ वसे पी
 ठे तो ठारा भारवनस्पति वसेतिथेतां व्याधेवसरानादेउ छाति वसे छाति तो हण मंत जनीव
 सेतिथेतां व्याधे • काल जे वसे काल जे तां काल कादीपक वसेतिथेतां • ठिलि कुयी वसे ठि
 ली कुयी तां सिद्धि भागर वसेतिथेतां • रावटे वसे रावटे तां चार रत्न वसेतिथेतां • रडल वसे
 रडल तां नल राजा वसेतिथेतां • गंडे लुरे वसे गंडे लुरे चार नैज वसेतिथेतां • फिन्ही वसे
 फिन्ही तां वज्र वसेतिथेतां व्याधेवसरानादेउ पयो वसे पयो तां मनु माटी होई जाई च
 हुचकु वारे चार देवी वसे होडे गाडे उतारने सेकेसे उतार साठ मले उतार अजे पाल वडा पीर
 छाड जाहरे व्याधे तु रूह सरार गंगा गुभी मासी भाराजी सावली भाई उतार आवरे व्या

मं० मु०
२

धेदाहिगोपाय वगायंड कवगावगायंड पांजपांडी वसेभीममैरां वॉजगी लाई वॉ
जमहोगोली वटोली जायसमुंदे वाहांड फल्लुमछे वाई कालु लुहारे औ ज्ञा जाल्ल
सफल्लुमछे जाले लागा दीली विच्या गुजरा तेवेच्या दशजगां रवाया वृहमंडल पडोहे
वाले कंते वही वाध्याई ह्यादी देवडे मंगलेशा धाचगा चमारे चंवडे वाधी तैते तेल छड
कावशी लाई नकुले मुमले कूटशी लाई नकुले नीश्रुले घडशी लाई अर्जुणा
वोवारा कीलु भीमसेन के तांशो कीलु हगामंत के मुदगरे चूरु हचन करे विकारनाक
रे शल्लणी सर्वाहना करे श्रुलना करे माधे मासे वेवो मुहारे काममवारे लाडवाई
दाखे जंभरे वजी वरीये वटे मीठे अमले मेघमंडले छावे न्हार धोयेक पडे देये अच्या
विकारना करे राति दिने सुता जागडे वारा विकार सभाका वंध कील्लु हेन वंध सेत
बंध पवसा पाणी का वंधः गुरु वंध कुरुक्षेत्र का वंध आबुशा वंध आता पिता का वंध
फरा का वंध अयंड का वंध नीरघट का वंध नरंजन का वंधः कंचन का वंध मा. रामः॥

२

हादेवकाबंध चारवेदचौराशिमिद्धकाबंध एकबंध दोइबंध तीनबंध चौराशिमिद्ध
 काबंध सातसंतोषकाबंध आठवारकाबंध नवग्रहदेवतेकाबंध तेतीसकोडदेवते
 काबंध नवनाथकाबंध सप्तहयिकाबंध वाराजतीकाबंध दशदिशाकाबंध आठ
 धूरकाबंध शङ्खसाचापिंडकाचा फुरोमंत्रईश्वरकीवाचा वाचासोयलेतोकुंभीनरकमे
 गले २ इति सर्वव्याधिमंत्रशुभम् अथ भूतप्रेतजडीमशारादा ओं श्रीगुरुकों आदे
 स हाकमारांगंडफारों हाथेवा जुलेह दुहाई कलूच्यावीरकीकाहू पेकह देह ओं वि
 समित्नातकयोसीलाग मरुमदाविर आयावामे हाथकमानदेयोवीवीजिलेवांके
 पूता तूजागता आया औरवाजता आया घुरंता आया किलकंता आया तुरकायविम
 बंध तीनगडकासिंगबंध तीनमैसकासिंगबंध मनमाईदेवीबंध पीछावेठारावराबंध
 रात्रासुधिलकाबंध आकाशईंद्रबंध कालाबंध कालाभैरोबंध नवनारसिंहकाबंध
 दाढबंध वेदकबंध भूतबंध प्रेतबंध देवबंध कालबंध डाकाराणीबंध दानोबंध छलबंध

मं.मु.

३

छत्विद्वंध॥ तापबंध॥ तिजारीबंध॥ अशीबंध॥ धारबंध॥ जिवजारीजिवबंध॥ ईकुलस
 अमिहजारपिकंवरबंध॥ कीडुहाई॥ तैराविडा अनंतचले जिउंजिउंजागातिउंकरे॥ दामो
 दरुहमकोपकडदेते॥ वीवीजिलेयांकेपूतासुंवरमुरदाभक्षगाकरे॥ वीवीआमायांडेदूध
 पीते॥ ईलाईलाईलालिलायकूमहंमदवीरहंकारः॥ २॥ अथमंत्रउंकराका॥ ओंन
 मोआदेमगुरुकोंआदेम॥ ओंनमोनारमिहायकपलकेशाय॥ स्वेतमिहाय॥ वहुक
 हुविभूषणाय॥ तवप्रसादेअसाधसाधाय॥ डाकशीवांधोशाकशीवांधो॥ छलवांधो
 छरिद्रवांधो॥ दुष्टवांधोमुष्टवांधो॥ मडवांधोमशारावांधो॥ हिमाचलगक्षमवांधो॥ ओंही
 ओंहीलीलींलींबीबींहांहांफदुस्वाहा॥ मेरीभक्तगुरुकीशक्तफुरमंत्रईश्वरकीवाचाफु
 रे॥ पुनमंत्रडागकोशिरसौकरादि॥ ओंनमोआदेमगुरुकोंशिरगायेवस्तरा॥ पारेशायेकुं
 तला॥ पायतनरेहराकुसुमकीडडीवेधज्ञानकरे॥ फूटफूटकेयेचरीमरेहाकनीडाकनीम
 रे॥ शेलीहुंदीदीपदहोठे॥ घरेघरेठंठंकादी॥ फिटफीरीद्वंदेउ॥ ममुद्रामातापिंजराजाहो रामः॥

३

रेखचरी तं हं संजगा गौरीका तंत्र ईश्वरकामंत्रः ॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त फूरमंत्र ईश्वर
 की वाचा ॥ ३ ॥ पुनः मंत्र डागको ॥ ओं काली काली महाकाली ॥ शिर राखे जटा मुह वि
 कराली ॥ बाये डे रहे मशागा दध पूत अगारि धसिध आरोग ॥ चले चलाई आय वेठ उ
 नई चाते ॥ वायुरी माई कारन का की पुत्री अचय चयणी ॥ काल कंठ को भयणी ॥ इस पि
 डे उफनाटक करे चेटक करे विज्ञान करे निसको भयणी उर्ध कुंड मे फाटी फूटी मरे
 मेरी भक्त गुरु की शक्त फूरमंत्र ईश्वर की वाचा ॥ पुनः मंत्र डागको ॥ काला लोहा काला तंत्र
 की लू डंकणी तेरा मंत्र आगे चर्या पीछे पूगी तूफिरे डंकणी मंत्र बहणी ॥ इस मंत्र उ
 प्रगर्भ करे डंकणी उर्ध कुंड मे फाटी फूटी मरे ॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त फूरमंत्र ईश्वर की वा
 चा ॥ ४ ॥ अथ पुनः मंत्र डागको ॥ कीलु लोहा कीलु तंत्र कीलु डाकनी तेरा मंत्र ॥ डा
 कनी शाकनी ओर सिंहारी मार कुंडे पाधार समुंदे पार आगे आवे ताला दाहरी
 विश्रुत ऊर्ध करे अर्ध करे ऊर्ध कुंड मे फाटी फूटी मरे ॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त

ॐ
मं.मु.
४

फुरमंत्र ईश्वर की वाचा ॥ ६ ॥ पुनः मंत्रः ॐ नमो आदि सुगुरु कों ॥ हनुमंत वीर वपु डालो
 हे का कीला ॥ वज्र कछोटी मति शकाया ॥ नमो भूत प्रेत की छाया ॥ इम पिंडे छाया
 नारहे ॥ एक वी शती तागा जये ॥ २१ ॥ मोह गा मंत जये ॥ इम पिंडे की रक्षा नृ सिंहा वि
 र ॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त फुरमंत्र ईश्वर की वाचा फुरे ॥ इति शुभम् ॥ अथ मंत्र चौथ
 ईका ॥ काली कंकाली माहा काली प्रह्ला की पुत्री ईश्वर की माती ॥ कडक चीन बहु
 जावे लाली हर चंडाल गी ॥ हर चंडाल गी ॥ हर चंडाल गी ॥ चाम की कूथली थथली
 हाड की जपमाला फुरे ॥ मंत्र ईश्वर की वाचा फुरे ॥ अथ मंत्र जो ईस्वी मरदनो दुगा क
 रे ॥ कुमारी कन्या सो मूल कताई के कर देगा ॥ नमदनो अछा होई ॥ कैंवु देश काल रू
 कामाई ग्या रा की लोहे के ल्याई की लो डंक गी तेरी आरवी यस्मा विष्णु महा देव मा
 षी की लो डंक गी तेरे कान ॥ राम धनु बल छमून का वान ॥ डंक गी तेरी अमरी की
 लो वजरी की लो की लो नाम कुंडल का गोला नो दरवाजे कसर की लो की लो ईश्वर रामः ॥

रभोत्वा॥ मेरी भक्त गुरु की शक्त फुर मंत्र ईश्वर की वाचा॥ मुडे पचै ईं डी पारक्ष स्वाहा॥ ईस
 मंत्र साथ तागाने गां ठरा फेर धूप देवे कबंधे॥ रवि दिन तो चंगा होई॥ **अथ मोहणी मंत्र॥** मो
 हो जो हो वस करी तो नोहे परमाणा॥ सभा द्वारे जाये के मोहे सकल जहान॥ फलनाणी किस राजा
 की वकरी परजा करी विलाय॥ दशवृहमास मानने ही तो को भैरवी दुहाई॥ हमारी भक्त गुरु की
 शक्त फुर हो मंत्र ईश्वर की वाचा फुर॥ **अथ इस्त्री मोहणी मंत्रः॥** कंबु रुदेश कमर्या देवी परधारी
 परज्यो गरजंदा आवे नेश सलोणी जे मोजा मृती काली पीली सरसों तू मेरा वृत्ता जिये जाय तिथे
 फलनाणी मृती होई सी उठी ल्याय उदाई ल्याव॥ उचरणी ल्याव॥ उभरणी ल्याव॥ हमारी मेजा मृ
 तीवे॥ जे सों चौदसी नाहीं॥ नानूरहे पाव पवसी नहीं॥ ना कंबु रुदेश कमर्या देवी तेरी शक्ति मेरी भक्त
 फुर हो मंत्र महा देवी की दुहाई॥ **विधि॥** हजार जप करणी होमे तो होम करणाः कमर्या देविका प्रसाद
 बंडरणा॥ मंत्र सीधी होई॥ काली पीली सरसों मंत्र के उपपराणीः सातवार मंत्र पढना वस्य होई सत्यं भ
 वती॥ **अथ मंत्र तेइरे चौथई रुका॥** प्रिथि पतराजा मिलवाहरा॥ मिलवाहरा का अजे पालन॥ अजे

ॐ
मै.मु.
५

पालकाशोयवीर॥ शोयवीरके सातपूत॥ नितीपरमहजूर॥ तिडोतेइया॥ चौथईया॥ च
ववीयरायतेलेके बांधोः बांधोफलागीकी देही॥ धरायेयईपजापांबंधराउं॥ महादेवकी वा
चामांटलेतो कुंभीलूणा चमारीके कुंडमें गले॥ सातवारमंत्रपठे ७॥ ६॥ अथमंत्रडाकरी
कीलरोंका॥ ॐ नमो सवारासवाहा॥ हनसवाहा॥ ३ सतरेपरा॥ २९॥ बारगहमंत्रपठगा॥ डा
करीदाशिरमुन्यायाजाय॥ जेहजुरअपरो करगीहोई तो अपरोहाजुरहोई॥ ७॥ अथ
मंत्रडाकरीदा॥ ॐ तासातरसानूसजवान॥ यत्नसरोभवरहूपरुमंत्रपठनोबार२९ सरसोमंत्र
गीवालककों भाडादेगाउं करगीदोयजावे ८ अथमंत्रथरोंलेका॥ कछुरालीका॥ वन
मोयाही अंजनीमाईजाहेपूतहरामंत॥ काथथरोंला औरबाधमारकरेभस्मंतः॥ गुरु
कीशक्तमेरीभक्तफुरमंत्रईश्वरकीवाचा॥ रगवारमंत्रपठकेगोहेदीस्वाहाकीकारदेगीसा
तवारमंत्रपठसातहीकाकारदेवेसूर्यदिने॥ एकदिनविचतीनबारभाडास्वाहाकीकारदे
याकरगीसुखीहोयसही अथहलकेकूतयाकाउपाई॥ कुल्लारकेचाकतेभांडाउतारके समः॥

५

जो मिठी रहे सो लेगी फेर असमृत का सुकाय के कप उछास करे ॥ फेर उसकी गोली करे जि
 थे स्वान लडे उस जगाम फेर मिठी हाथ फेर्या करे मंत्र पढ वार ७ फेर मिथि देखे जव तांई मि
 टि मां केश निकसे तव तांई आडा करे ॥ जव केश आउगे तेरहे तव चंगा होई फेर सवा मेर तेल
 काली काली का कीपीठी पर पावे ॥ सवा गज मालू १ मोली देवी के देहर यणी जिस को कूता ल
 उपा होर ३ सो देया वरणा चंगा होई १० ॥ मंत्र ॥ ओं कालिका लि चरी पूजा सहति पिवति सि
 ला सह सं आं वधे आं कुरु आं कुरु कुरु आं मंजारं कुरु आं वेग चढि आं वेहल फ चुकते गुरु
 की शक्ती मेरी भक्ती फेर मंत्र ईश्वर की वाच ॥ ११ ॥ पुन मंत्र ॥ ओं ह्रीं ह्रीं सर्व विष हरणा य फट स्वा
 हा ॥ आडा देगा वार २१ पारणी भी मंत्रणा वार ७ फेर उमते पारणी पिया उगा वार ३ सात वार आडा
 देगा तद चुली पारणी पिया वरणा इमि प्रकार तीन दिन पारणी पिया वरणा दिन प्रमाण वार ३ आडा
 देगा जव तांई केस आवे तद तांई आडा देया हीं करणा चंगा होवे सही १२ अथ कूते पारदा
 मंत्र ॥ ॐ कमरु देश का जल मल कूता हो केन भो केन या रग्न पीवे ईश्वर महादेव की अर्घ्या

ॐ
मं. सु.
६

लगे गुरु की शक्त मेरी भक्त फुर मंत्र ईश्वर की वाच जाड़ा देगा वार ७ वाजी काला गता गाला
 गा विष उत्तर ॥ १३ ॥ अथ कुते दी दाड़ वन्द शोदा मंत्र ॥ उजाग जाव गा यडी राय चौर नट के कुता
 न भौं के रक्त न करे गुरु गोर य राय मरी भक्त गुरु की शक्त फुर मंत्र ईश्वर की वाच ॥ १४ ॥ अथ मंत्र
 ही का ॥ ॐ वामी कुयी वव से वामना वीर की पही के रे पाडी चीर आगे धव सीता हरामंत वीर की दोही
 हो सी मेरी भक्त गुरु की शक्त फुर मंत्र ईश्वर की वाचा ॥ वाजे वार ७ धगाला गा सुय होई ॥ १५ ॥ अथ
 मर्प का मंत्र ॥ कौकला माई डवरू वाजे चढ दावी शा पछाडु भजे गोकुल म्हारे यरा पियारा जु
 पि गीये विष घोली के बाधारू पेयी ठी सुई ने पाया गोर य राय ने की या डुं डुं कार वी शा जाये ममुद्र प
 र ॥ काली विली पीठी पाथर ॥ गोकुल मंत्र टाई आसुर ॥ वेद उभी वेद गा वडी सिंह पलारा गो आ
 पोचा ठी तुर कालि नाग गा वासु की ये धी ये ते मेरा वैद्य विडं म्या तूक्या जागा वेद गा आद जा
 गा पछत जागा काला घोडा काला वागा इनी मंत्र उत्तर वासु कानागा दशी यर फशी यर चडया
 चूडई वारा गुगा सी ठारी या नागा ॥ ठारा वठाई माटे गारा न आई काला घोडा काला वागा ॥

राम ॥
६

सातवे पतालै जाई वासुका नागा मेरी भक्त गुरु की १६ अथ सर्प दंष्ट्र नक्षत्रः ॥ यः स्तुतिका
 मूलन मया विशाया सर्प तिका डा मुभुज गदं त्यैष्टुः सवेन ते येन मुरक्षतो प्राप्नोति मृत्योर्वद
 तं मनुष्य ७ अथ सर्प मंत्र गारुडः ॥ जो धो वेधन रथानां गी दी माईः सो डाना म करे वेसा
 ला हर हर नाग गा घाई ॥ लह डे व डे मुं धर डे चु गो समुदा पीर ॥ पंथ प हारे विष हरे अमी फल
 वे नीर इम पिंडे निर्विश गई सरीर जो दाता गुरु के तन डी काली माग गा संय लाई ॥ हाक न डं
 का जगा वे सोई ॥ आक न डं क जमा वे सोई ॥ ॥ अथ कोई पी हा पंडता ॥ यही याठा व्याचा इवेग
 मंत वीर साम व वं ल हर मंत ॥ पुन गारुड ॥ हाथे को कल डों रू वाजे चउदा विष पछां हुं भा
 जे ॥ षडी पुकारे को कल मायः ही कया गारुड दी या पडु चायः गरुडे मारे वाही लाल जाये
 रे वी सा सत वे पतालः मेरी भक्त गुरु की शक्त ॥ पुनः गारुड ॥ बांधों अष्ट कुली की जाठः
 बांधो वासुकं का पवारः ईश्वर कहे महा देव पंधाये धूली येर नीह जुगोः मेरी भक्त गुरु की
 पुनः गारुडः ॥ विष उतारे धिन धिन नैन क माई जो कोई डं क जागावे उठ डं का जटा समा

ॐ
मं.मु.

लनववीसगडकीरुडीः मरगतोलाला विसडोलः कलसंभरेभतकहं उहरचूहरचरवरु
कराहुंः चुंजरीछोलवसाहु अमीयामेघधारवराहुं अमीयाकाछीपाहुंः चुंजठोकागमडे
याहुंः गरुडेमारेवांहीलालः जायरेवीसासतवेपतालः मेरीभक्तगुरुकीशक्तः पुनगरुडः॥
हाडकाकोरडाचवे मडियो उपरे छेलपछे वडाधरीया अमीयेकीपापसाउः ऊपरहरचूहरच
रुकराहुंः अमीयाकाकाछीपाहुंः चुंजठोक गरुडेयाहुंः गरुडेमारेमारीलालः जायरेवि
यासतवेपतालः मेरीभक्तगुरुकीशक्तः पुनः मंत्रः॥ काचाकरुवा अमीयाभस्यानेईसपारत
तीधरीयाः इश्वरटालेपार्वतिन्हाईसोभारवीसकानरवीसहोईजाईः मेरीभक्तभक्तः पुनः ग
रुडः॥ टोलनठमाकेविस्मजोगरुजाहुंः धोयेपीडसकरासिरमेरेटकाराः अकेलनेकेल
छलवछडे मराराडालीः ताथतलछलो बाधारमेरा वारहे घडानिरधारतेलेवीवीगासन्हाणी
विस्मजाराणीविहाणी नौलथद्वारेनौलथवाडो स्वीनापीडावल्हाचाटे गुरुमुद्राम
डेपडे सर्वदोषनिवागोडाछाड जीवसुखपडेभूयः दोजगालाग्याहेतः होके गुरुकीवि

रामः॥
७

घामनी नरके तस वल हंसा के सकला हा हंसा हंस गी पदम गी सुइ ना धउं सुनारः त भरे
 इस पिंझा डाना करेः मेरी भक्त गुरु की शक्त० पुनः गारुडः॥ संघडुंड वडी वाजे कलम भयो
 धनंतर गारुड तु चाहरे आयाः काली नाग रा राजा पारुंडे म्या जगो वरा जाहुंः आगा पीछा लो
 टिका डी बैदो बाहुं पूर्व हृदी नारी आई हुं हुं कार कर दे पाईः इछार मट पं वदी आई वड पीप
 ल दं हृदी आई बहु खडु देवा गग रा मारी उताले वाला नाथ चलाहुंः आगो गंग जमु नाते आ
 लू की लो आठ कंठ जी भसां तालूः तलली जाय तले की लो अप्र जाय की लो गाम काली नाग रा
 के जाये ते तु काटे सासः मेरी भक्त गुरु की शक्त०॥ ८॥ पुनः गारुडः॥ रक पात वड ला उदोईः पा
 ने वड लां ऊतीन पाते वड लां ऊचार पाते वड लां ऊः पंज पते वड लां ऊछे पाते वड लां ऊः सात
 पाते वड लां ऊः पर वडो टालां ऊः नाथे पाथे मर्प लां ऊः सर्व गारुड टला टला ऊ देव मर्प तु
 मेरी ओडे जाहं पहु च गुरु की हाकः तहां छोडे चां भवाकः जहां पंहुं च गुरु की दृष्टी तहां तु
 करे श्री श्री मेरी भक्त गुरु की शक्त पुरे मंत्र ईश्वर की वाचः ८ पुनः गारुडः॥ सल सत छ

ॐ
मं.मु.
८

रीदेसीवरोराहसराहकृता लोगसेकेवटीवाले गडाधरीरधुरांदीमेंतटेथापकामे
ऊनरसोंपासायले नसेकेवाटीवाले: गूगाहंथभ्रमोदा गांढवीमरकाले: छंडेमा
टेहोकरडंडेपांवलेरतनालेमोतडीयायुगहीयेलेलयचितमनवाला रक्कजोनागाना
गावेटी: नागशीवास: हलातेतीकोचनलाई रकालीयादेगुरुजुबडेहरतेभीतते
कहीयेछेछेतीभावालेवीधेकरधेवातडीराहमीराह अतरवडीई: इसलेयेकोवनलाई: र
कामीयादेगुरुजुबडेवडेपेटकुनाले अष्टकोडीनागाकंपेईहाकवशासनाले जेगगाम
ने आपराजापरैहै मूर्यपयाले मेरीभक्तगुरुकीशक्त फुरमंत्रईश्वरकीवाच॥ अथमर्प
वन्धुगोकामंत्र:॥ वडीकेपेटवडोटजम्या जाकेडकेमहोदेवआया शंखचूडेकेपांवडी
गजमोतीकोहार: पदमनीचलीपाशीयेलेकाहुयाजोहार: लेकासेकोटममुइसी
थाई: बांधोदाढवियचरकीदियोडुहाई: मेरीभक्तगुरुकीशक्तफुरमंत्रईश्वरकीवाच:
पुनः मर्पवन्धुगोदामंत्र:॥ ॐ आदिमगुरुकोल्यायोगगजमुनकीवालकीलेतेरीना रामः॥

रामः॥

८

ईजिनिरेतुजायाः कीलोतेरीवह्मभांराजीजिनेतूगोदयलायाः कीलोतेरीराहवाटजि
 मगहवाटतूआयाः कीलोतेरीवंवीजिसंवर्षमेउल्लगनागसमायाः शद्धसाचापिंडकाचा
 फुरोमंत्रईश्वरकीवाचाः वाचासोंटलेतोकुंभीनरकमेगले १३ पुनसर्पमंत्रः॥ ओंनमोआदे
 मगुरुकोंढोलढमाकामेसरायाकोकल्लमंत्रमेरानानुंजाहोसुरोमेरानाउंः उंहांछोडेचा
 रेगांउंः जहांसुरोमेरीहाक उंहांछोडेचारेचाकः शद्धसाचापिंडकाचाफुरोमंत्रईश्वरकीवा
 चा १४ पुनःसर्पमंत्रः॥ ओंनमोआदेमगुरुकोंकैलाकोंकलापरेसुधारे जटीदेनविटोवेवो
 लढमाकेवियउत्तारेः कालीविल्लीनीलीपावरकोकलामंत्रटाईआवर शद्धसाचापिंडका
 चाफुरहोमंत्रईश्वरकीवाचाः वाचासोंटलेतोकुंभीनरकमेगलेः मेशभक्तगुरुकीशक्तफुर
 ईश्वरवाच १५ अथसर्पगारुडा॥ पहिलाआयावासका नागापहिलाकतराआयापहिला
 घायापारीकराजा पारिकराजाकोंशायाया जधजायातधयाया पारिकराजेवृहतिवाली
 वासुकेनागेअधमेठाली॥ फुलेकलीशिरलागी॥ शिरेउपरेयायाः शिरकलीपैरहेठपडी

ॐ
मं.मु.

पयसं पखाधा ॥ तेरा गारुडी कौरा होंदा ॥ मेरा गारुडी जल धरे वेद ॥ जल धरे वेद कौरा होंदा ॥
 जल धरे वेद समुद्रे पार ॥ समुद्र पार कागा जाला ॥ समुद्र पार हरामंत जाला ॥ दोई सनार स
 ई नाघडे ॥ दोई लुहार लोहा घडे ॥ दोई कुटगा हारी धान फूटे ॥ हुशी जावे हुशी आते हुशी
 हुशी काम कमावे वेदरी वेदगी पृच्छ गालाया ॥ तू हरामंत कांहां ते आया ॥ होरे वेदगी वे
 द पे आया ॥ वेद बोले हाथो परयाड ॥ वेद बोले हांउं परजाऊ ॥ गांठी रटो पी हरामंत खोल्हे ॥ पाय
 पतल डी हसामंत खोल्हे ॥ सह चलये डा हरामंत दिना ॥ कोकला मंत्र बोलदा चला ॥ मृका
 काठ फलो दा चला ॥ हरे डर फलो चला ॥ वासुके नागे अधमे ठाला ॥ तूरे मारुड कांहां ते चला ॥ पारी
 कराजा सवैयाया ॥ पारी कराजा मेही बाधा ॥ मेरे बाधे कौरा जियावे ॥ तेरे बाधे हांउं परी जियाऊ
 तूरे वेद क्या जारा ॥ नौ कोह च गांहुं जारा ॥ नौ कोह पछांहुं जारा ॥ क्या डी पाछे मंत्र जारा ॥ उ
 लदी सर्प क्या डी याया ॥ वेद ते वेदगी वडी कोकिला मंत्र बोलदी चली ॥ छमा छिर मूवे जियावे
 दी चली ॥ वासुके नागे अधमे ठालो ॥ रे वेदगी कांहां ते चाली ॥ मेरा गारुडी सर्प बाया तेरा गारु
 डी मेही बाया ॥ मेरे बाधे कौरा जियावे ॥ तेरे बाधे हांउं तूरी वेदगी रुक्या जारा नौ को

हृद्य गंहं जगत् नोकाह पछो हं जगत् क्याडी पाछे मंत्र जगत् ठंगे ओठे वेडे रकोटे हरी
 वउम कौशालिई दुध कटेरी रसिंज गालाया चारि धूरा वांज गी आणी पाताल समुद्र वांज
 आंगो ताते लछड कगालाया मुना पाहं गूग मेरीये माये विष मेरा निर्विष जाये चारें वेद
 की वाचा आदे म गुरु को धन्यंतर वेद नागा देदा सि आये मोर मोर पर मोर वैस रहो नाग न
 यार विष संकल हर हि मोर काला कुमाल लहर मोरः पग वेठे वास्तु दे की राणी दुं गे मा
 र को विष पाणी नील कमळ की प हो डी गल मोती को न्हारः पद मन पाणी कलर लम्का
 ले हा जुहारः लम्का सा कोट समुद्र सीवाई गौरी के मिर होइ उत्तारः उत्तर विशा ज्ञा को
 गुरु की डुहाई नाना डी सहो उत्तार वह उत्तर सा को ठडी सहो उत्तार जो उत्तार नाही तो शि
 व शक्ती शिव शंकर विशा नृशंताः मेरी भक्त गुरु की शक्त ॥ अथ मंत्र मर्पका ॥ मुक्ति मुस
 त्य मोम मराम जाई अन्न काटे को पाणी प्यावा कटया उत्तर जाई मेरी भक्त गुरु की शक्त पुर
 वार ७ वार २१ मंत्र के पाणी प्याव के कटे को के वर ल्या वरा बाल को विष उत्तर जाई

ॐ
मं. सु.
९०

पुनः मंत्र ~~सु~~ सुडा ॥ ॐ आदेस महादेव के नाम वम दाहेः कनें लगे वम दे का र्ग होइर
हे दाहेः विषमुषपयोफगा विषमुषपटगा हारः आदवचन गुरु संमहले जो विशास
नैवारः कहौ सुता कहै पडताः तेनर गरी कमलासः ब्रह्मा चक्र सोधिया तो वीशा
नर्विश होईः इडा तिला करि दांत पीडा रते लै बहायु मेरी भक्त ० पुनः मर्यमंत्रः ॥ वि
षमनिपुत्र भर गरुड की डोही गुरु शक्त मेरी भक्त फुर मंत्र इश्वर की वाचा पाशा मंत्री के दे
गा के भमंत्र ढोल पर लिय के ढोल बजाव गा विष उत्तर होई ॥ अति मर्यमंत्र मपूर्णा शुभम
अथ मंत्र विष्कृका ॥ ॐ विष्कृ करिया ला सुझे का डंक रूप का पना ला उत्तर तो उत्तर नहि
हन मंत वीर हकार जाहिरे विष्कृ गुरु की शक्त मेरी भक्त ० आदेस लोहे भाथ मतवार नार
विश विष्कृका उत्तर जाई ॥ पुनः मंत्र विष्कृका ॥ पारममुंडे लाई वाडी तेते उपजी के लवहाडी के
लवहाडी की या गोहा तेते विष्कृ होयाः टकरे विकुरे शाशा याशा पाथर हेटे कुशाशाः आ
आद जरा गू मुलाद जरा हं मंगरुंडे छाडी लालः जा विशास तरे पतालः मेरी भक्त गुरु ० रामः
९०

पुनः मंत्रः ॥ ॐ नमो आदि स गुरु को तेरा नाउः काल बिछू कुंभर वानाः सृष्टी गाइ के पेट उप
 रंवाः कहो रे बिछू तेरी जाताः तू जन्मा आमा वास्या की राताः यपरी की डंडी न्हें सकी धारः
 उत्तरो बिछू लगे नवारः शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र महा देव की वाचाः चील्ह का छिल्ह
 कालावे ३ अथ माहुरे का मंत्रः ॥ आदि स गुरु कोः प्रिहिते कारी पदी का फटः फट
 का नर घटः नर्यट का निराकारः निराकार का निरंजनः निरंजन का कंचनः कंचन का ईश्व
 रः ईश्वर का ब्रह्माः ब्रह्मे का विष्णु माहुराः तां कोरा कोरा माहुराः मिगी सक्सा करणीराः हल्ला
 ल माहुराः गेरूः हल्लहः कपडे आल वंछे डे आलः कंड्याल ह धियाः लभगा माहुराः
 ॐ तपत दयाया काठी उत्तर माहुरा गोवर माटी दाः काल कूट माहुरा हरे वहाथे वावे पार
 टलेः ईश्वर की पूजा टले जे तू वाधा माहुराः उपर चढे सिर चढेः अचु चढेः तीर पर्वत योधा
 ह पडेः मेरी भक्त गुरु की शक्त फुर मंत्र ईश्वर की वाचः सैंदर सैंधी वेधा काली का पोष
 री ब्रह्म जे काठी मिटी उत्तर वीशा गोवर माटीः दाहिरो हाथे वायटलेः जे तू वाधा माहुराः

ॐ
मं.मु.
९९

ऊपर चंटे सिरचंटे अवर चंटे गी माटी जिऊटे संपठे: तांगुस्की शक्त मेरी भक्त० गा
गी गुगी दीवाई बहगा तिसकी सेजा तृपाधरे तृया धामाहुरा ऊपर चंटे सिरचंटे आ
चरचरे अनिल परवत जिपोट रूपरे गुस्की शक्त० होम कटी घत: तृस्की हारा बु
ता: गौरी पेर त्माई अरे यांये पीट महा जाई: गुस्की शक्त० १ उगु निगरे विशा होव
तेरी हठके वछे डी: तृमेरा सर्व गुवाल विनाया या हि फटके विशा यो हरी याकुं० गुस्की
हा शक्त फुरो मंच इश्वर की वाचा: २ पुन: मंच माहुरे का॥ मंच तेरा माहुरा के वरु वरि रज्या तृ
जि सदे येद गी परमा गंडे रां सी राती जाया नारायण के भारो जे माहुरा ई नी मंचे निर्वि
शाता: मेरी भक्त० उपाय:॥ अक काडु धलंग सेती मर्दन करे अंजन करे माहुरा विष जा
ये: चावत्त के धोरो सेति माहुरे का विष जाये॥ पुन:॥ अंवली के परस सेति सपका वि
ष जाये॥ पुन:॥ निष्टु के रस सेति डंक पाछु देइ के मले संधी लेप कर के विछुका विष जा
इ॥ अथ फीम के विष उतारने की औषद॥ स्वेद ताग की जड पीसि के उमकी पारी पत्ता रामः
९९

तेविषउतरजावे पुनः लाललौंगकी जडदेवे विषउते माहुरा विषउते॥ पुनः **चौ**
षद भागकी भांगकी औषद भांगकी जड पीहके षटी छह देगी अन पीछे ते देगाः
भांगउतरजाइ॥ अथ मंत्र मपका॥ ॐ नमो भगवते श्री धारो हर हर दर दर पर पर तर
 तर वर वर धव धल लल लो लो हर हर भम भम ससर सर रां रां क्षी क्षी ह्रीं ह्रीं भवा वति
 श्री धारो यः यः ठः ठः सं सं वर वर वस घटा वर रूपे ह्रीं ह्रीं ट वर पिहंग ममानुष्य
 यो मरु मंत वद वद सेवरी ठः ठः स्वाहा मेरी भक्त गुरु की शक्त फुर मंत्र ईश्वर की
 वाचा **अथ चोरी जाई घडे फेरगा दामंत्र॥** गुरु गो साई को नमस्कारः पारलंका आपकु
 न्दरति निघाटु मीठी ईश्वर चटी गौरी हार ठाडू आया ईश्वर पडा भमाया फिर फेर ईश्व
 र के तप साता के स्तोः हन मत के डपे काल का के वचनः गुरु की शक्त मेरी भक्त फुर मंत्रः
अथ चावल को मंत्र चोर को॥ पंचवीर की नामंत्रः आरोग्य चावल वानो तंत्रः कील्ल शोषण
 लपरापे साधे राये चोरे मारे मेरी भक्त गुरु की शक्त फुर मंत्र ईश्वर की वाचा वार ७ वार

ॐ
मं.मु
१२

मैंत्रः॥ अथ कठोरी कठोरी दामैंत्रः॥ ॐ हरि धमली अधमलें लीजे शंख पटगा का हलदी
जे चलें ईंद्र अग्नि वलें तेति सकोट देवता चलें नारायण चलें शिव चलें सूर्य चलें मंजु मय
डंवर चलें कमव्या देवी चलें आजापुरेः चलें हो चलें वेग वंत हो य चलेंः ईंद्र राजा की आ
जा ही सी चोरानों कुंडः साध सचार्य मूठे तू ही विचारः महादेव अज्ञा ह्मा मंत वीर की अ
ज्ञा चलें चलें फट् स्वाहा पूजा डांडी करणीः पंचगव्य भीषणी डोरी वन्हणीः मेरी भक्त गुप्त
की शक्त फुरमैंत्र इश्वर की वाचः॥ अथ चावल चवा गोदामैंत्रः॥ आ न हो चाव मुली पंतः तू सो
यया काली या कंत क पडीया बुल हो निरवीरः चावल चवाडा चवा हथुक शोषः दू होठ कंठ
भारी होः साधा चारों वीर हो सच छेड हो असत मार हो सो घिया वीर तेरी अज्ञा चलें मेरी भक्त
चोरी दामैंत्रः॥ ॐ नमो सिद्धी रामा चलें रात्रा चलें ईंद्र कि ईंद्राणी चलें संसार ते गयंद चलें
पाताल ते वासुका नाग चलेंः इकल वीर हन मैंत चलें मुग्गी हो नाराजा को नार सिंह तेरी थो
रुक्त तेरे मैंत्र फुरे ॐ सिद्धि स्या कोरा कागद कुंमारी कन्या के हाथ देगाः अगमे करणा च रामः॥

नशेन्होकागजउपरवे ७ मंत्रपटिके पाशा कन्याके हाथ चोरका नाम लयाशा ॥ पुनः चो
 रमंत्रः ॥ तिषताली ॥ सुषताली नाटे दर्वदर्व रवाली ॥ तिनचूल्हूतीनपाशी नाटे दर्व आशी ॥
 आली माटी काठी कुकल्लरः ताता लोहा घडे लुहारः आला मुई ना घडे सुनार ॥ हे
 री हेरी सूर्य हेरी ॥ रातनी यातो चडमे दिठाः दिननी यातो सूर्य दिठाः ॥ चलने उतावली च
 लः द्यरा नी यातो द्यरा चलः ॥ पछमनी यातां पछम चलः ॥ उत्तरनी यातां उत्तर चलः ॥ सा
 धदेय लूके चोरदेय लूकेः मेरी भक्त ॥ अथ ईस्त्री पुर्य वधनं तिसकामंत्रः ॥ आदेम गुरुको
 र उलटंत वीर पलटंत वीर कायाः ॥ छोड छोड चोरकी मायाः ॥ रामलक्ष्मणकी सीता माता
 वनमाई रामलक्ष्मण जायकरे ॥ चोरको छेडो तत छिन माई गुरुको शक्त १ रत्तायान
 पत्र मिठी करिहा फुधु सिरी करी पत्र लिख याशा १ अथ कमलपितकामंत्रः ॥ काला धोला
 दोनो भाई काला वध्या कडुन जाईः त्रिपीको पलेले पशी होरः जाई गुरुकी शक्त ० अथ
 पानकामंत्रः पत्र पत्र पान पत्र मेरे मंत्र मोहन शत्रुः जिस देखा दिहो ए मित्रः मेरी भक्त गुरुकी

ॐ
मं. मु.
९३

अथ रत्तांजुलिका मंत्रः ॥ रत्तांजुलि अउ दिठि से गरुड चुणी चुणी बाई गरुडे धर्या जि
हा भाईः सतरत्तांजुली दीनि चुकाईः पारसमुद्रे दी चुकाई कंवरु देशक मध्या माईः लू
णा चमारी की अग्या धाईः तिसपलुटति रत्तांजुली निवुकाईः गुरुकी शक्त मेरी भक्त ॥
लूतदा मंत्रः रामेद हा सरमास्या चौघाट सांथि पीडा सितर कर्ष लूत करो भस्मा भूतः मेरी
भक्त ॥ अथ नाना बीदा मंत्रः ॥ गंगा गोठका मरा बाटः मद पान मठे लीया या अंक पेसी
पीडा जाया हरे जो वरा लूणा चमारी हरा वीर नू हंकार उतानां ही ताठो हरो हरा मंत वीर
हंकारो उतरे हरा मंत वीर कीले कलावे अठोत्तर सो व्याधी मेरी भस्मा होई जावे लोह लंग
आई अवरानी मे वटि हा की श्री रामे पाली अजनि ते सा जाया पुत्र हरा मंतः अठोत्तर सो
व्याधि मा भस्मंत मेरी भक्त अथ फोडी दामंत्रः ॥ गरुड समुद्र गरुड समुद्र मान समुद्र फो
डी श्री रामे तो डी हरा मंत मार छिदि डी फोग लिफी ही गल गुदल हावो गो नुर विश गुरु
शक्त गोरव तरारे वरे व देगी ३ मंत्र पठणा ॥ गल घंडी सा हरा दामंत्रः ॥ गोरी पुत्र वि रामः ॥

नाथकजायाः कालूयेकसौघडीहांडी भटयाइगईघाडीहाडी उवलैआल्लनहुडैगा
 भरु उसाहै यातील्लुगुरुकीशक्त० **मंत्रनामवेदाः॥** वानकावेढीयाईजनेउतारीकूपेमेडा
 रीपकेनफूटे जलितोतिभस्मंतहोई॥ यादेहीमेनारुवातहेतोदोहीगुरुः पितानाथकीमेरी
 भक्त १४ गुडकीगालीकरणीवार ७ मंत्रः घोडकोरोमेनारुवेपरवांधे॥ **अथमंत्रइस्त्रीडा**
अमृतका॥ करकर नमोराक्षसोंतस्यनमः गुर्वणीप्रसथेतस्वाहाः॥ **इतिमंत्रतेलमंत्रा॥** इ
 स्त्रीनोमर्दनकरेशीघ्रुगर्भप्रमुच्यते॥ मंत्रपहीकालजेका॥ सरहगईकेपेटमेकछउपजाका
 लजाः कालजायटेसर्वधेमेरीभक्त० अंगुल ७ काकानालेधवार २१ आडाकरणासत्ताठ
 काकानालकरणाः फेरजताकानावधेतेताकदशा॥ **अथवाईकालजेकामंत्रः॥** कैल
 सपर्वतकेलासपरवततेउपरकैलागईकैलीगईकेपेटकेलावाछाः कैलसछेकेपेटके
 लाकालजामूकेसर्वधेः मेरीभक्तगुरुकीशक्त० २ ससर अंगुल ७ **अथघांथीडाकरणी**
दामंत्रः॥ लोहुपाकलोहुनपूर्व लोहुनपडेनहोईः श्रीगोरखनाथकमस्यामाईः मि

मं. मु.

२४

तिनकरी अविदीपीडा चुकाई मेरी भक्त गुरु की शक्त० **अथ पट पीड राम मंत्रः॥** लक्ष्मण राजो
 शूल व्यापी हणामंतल्याया मूलः आपर्षजि पश्याया और कोट्टे के शूलः मेरी भक्त गुरु
 मंत्र वेर० पट लोहे किछुरी सां पश्या मंत्र गा॥ चुल्नी पलावे हार की सीनो पट शूल जवावे
अथ पट पीड गाले को मंत्रः॥ श्री राम चंद्र चटिया हंडा राम चंद्र चटिया गेलाः नाथु महत
 पश्या कीर्ति आपी तारामादि नाम उत्प गेलाः मेरी भक्त गुरु की शक्त० सात चुली पश्या
 पलाव गा॥ **अथ सीर पीड का॥** ओं नमो भगवते नमो गुरु को आदसः दशमा दश मारु का कू
 पाः उहां मूखे का पांथः म्हारी ठा की ड येन सिरः मेरी भक्त०॥ **अथ मंत्र आधा सी सी का॥**
 काली चिडी चुइ चुइ पवे धतुली पवे न पास आधा सी सी तो डीलीया लक्ष्मण मारी हाकः
पुनः मंत्रः॥ काली योगिणी कीलक मारे राती योगणी हसी हसि मरेः हणामंत वीर
 हाक मारे आधी सि सि न मेः मेरी भक्त० **अथ दसन ड्यरा का मंत्रः॥** इंडा कीलो पिंडा
 कीलो कीलो जाळवा कीडा मेरी कीली पीडा करे तां हणामंत जती कीडु हाई फिर मेरी भक्त०

अथ दाउ पीडका मंत्रः॥ समालसही रुमंत्र सातवार गुंठे साथ गलमा खु हावे कोर दाउका
 कागद पर लिखे पीडा डुर होईः ७७७॥ अथ मूश की जितृ तिदा मंत्रः॥ मूशा समार देवा
 हन गौरी पुत्र विष्णु वाहनः दुषेयति वल्हा दाढ गुस्की शक्त वार ७ मंत्र के मे होयति वि
 च पाणा॥ अथ वायदा मंत्रः॥ वाघ वाघेतिको राजात अचल वीर वन को राईः चार नद के वा
 घन घायाः उंदर हर की मूडो माईः इस वन छोड हो अवर वन जाईः वन के मृग को ढो लठो
 लयाई लेवी पुंछट छोटे कानः इस वन अंच वीर पीर की आनः छिन अंदर छिन वार जाईः
 इस वन छोड आर वन जाईः छिन वामे छिन दाहरी आईः डुहाई अंचला पीर की आवे हमा
 रे वरामे क्या वाघ बुलाया भीम डुहाईः अंचला पीर की जे आवे हमार शिमः मेरी भक्त विधि
 जिस वरामा वाघ आई तिस राशको ०० ----- लेगा जिस राश राह हाइ उस राश के रु
 यकी ----- लेगी सो मेयु माह लेके सिर देगी ----- वाघ ग्राम की सीना आवे --
 ----- की सिर सो चार दिमा डारनी दिसि दिमा रुट दे आवेगाः जिस मनुष्य की राश

ॐ
मै० मु०
९५

गहहोई उमतेमैहो गटते अवगा १॥ अथ शशमृशे का मंत्रः॥ शशमृशे ह्येसो
हगा आठसो सोलीसैहो के दशो लैगा चोराहे की धुडलेगी मशागा की धुडलेगी
आरगा की धुडलेगी॥ मंत्रः॥ हाके शश बुलाये भीम दुहाई होई अंचला वीर की जे
असे हमारी सीम मेरी भक्त॥ विधि॥ सभ वस्त कठी करके सूर्य दिने मंत्र वार २३ छठ
तिथ लेगी मिंरुल मलेगा येति विच जाइके फुक मोर मंत्र पढे सभ वस्त उडावेः पिछे पि
छे हटके आवगा हथताली मारगी गहेशश गहेशश॥ पुन मंत्रः शशमृशे दुहाई
साहगा जोरी पुत्र विनायक वाहगाः वाटघाट की मिटी मसागा की छाई साथ चिच आ
वेतां रुगा मंत की दुहाई मेरी भक्त॥ १॥ वीन वन्तु गाका॥ मंत्रः॥ वादी आपे वाद कर
ते आवा वादी वैठो वड पिपल की छाया बांधो वादी का कंठ अरु कछाया बांधो वादी
साज वाज बांधो वादी का छानिगा धरी वेल की तुंवडी हरे वांस का नाडा तुवी को बांधो
गामे वीर भरो मत वालाः जल बांधो थल बांधो बांधो तुवा ताईः चुप होरे तुं तुंवडी रामः॥

१५

हृणामंतजतीकीडुहाई: शद्धसाचापिंडकाचाफुरमंत्रईश्वरकीवाचा॥वीनबोल्
 रोकामंत्र:॥लैंकासाकोटसमुद्रसीधार्ड: युल्हवोतुंतुंवडीतुंरुहणामंतकीडुहा
 ई: जलसांघालथलसांघालाघालातुंवाताई: वालवोलरीतुंवितुंरुहणामंतकी
 डुहाई: मेरीभक्त:॥१॥ ढालपैसेदामंत्र:॥वालरयेवालनीकपालरयेअर्जननांअ
 गारयपारवतीलेडडेवीरहणामंत मेरीभक्तगुरुकीशक्त॥अथकोल्हूयमरोकामंत्र:
 कालाभरोकपलीकेशकानेमुद्राभगुरमेशडंडीमालीहाथलीऐनोबंडपृथमीसा
 थुलीए पगयटाशिरजराभैरोबुडाऊनिनसउसाउआशामेत्वापिंडकाचा: फुरमंत्र
 ईश्वरकीवाचा॥१॥ अग्निथमरोदामंत्र:॥ ओंनमोआदेसगुरु:कोअग्निजलंतिकर
 धरोमेचीतुमतुहाथ: मेवस्वबंधियादेनारायणासाथमेरोओठकंठजलेमुयतल्ल
 जलेतोगोरापारक्तीकोंचीजले: मेरोओठकंठजलेतोमहादेवकीजले: मेरोओठकं

ॐ
मं.मु.
९६

ठजलैतो मुषतालूजलैतो अंजनीकोंहीयाजले: मेरोओठकंठतालूजलैतो निर
जन्तीधानजले: मेरीभक्त० ॥ पुनः अग्निस्थंभन ॥ अग्निधंभे अंगार वाईहाथज
लेनगोलाजले: मेरीभक्त० ॥ अथ कडाहीवधनमंत्रः ॥ उं उपक्षीमदे सतेचल्यताई
सीतलषमगाषमचटाई: ईश्वरभोलाथंभेगौराहाई: तेलकडाहीपाणीहोईजाई
चूहपीछेरुनु मंतवडा हाथ पालिकाठीले मुंदडापोडां वैठी गोरुहाथदिष्टुदे
वीपानिहोईजाई: मेरीभक्त० वार २९ मंत्र पठे कडाही ठंडी होई: तेलजलेनही
अथ धारवधनमंत्रः ॥ उं धाराधारमजधार बांधो लोहेकी धार: धार बांधो सातवार:
रफकरे श्रीरघुनाथ आवे लोहूनफुरे पाउ: मेरीभक्त० पुनः धारवधन ॥ माहि
केन सहकरा मलेंतुदहरं: कटीघाउकटारक्त: नेहीघाउनही पूजाचंडीर-आ
झाघाउमहकजा: त्वारंपठत: मंत्रगाईका: ॥ राईराईमहा राईलंका पारते किन
मंगाई: जोराई तेराजाणे भेवदोजणे काकरे विछेव: एकोगामारजा एकसुभा रामः ॥

व द्विजगोपाविच्छेद नावकालाभैरौ तेरीवाचा फुरे डंडो रा दिन दिन धरै मेरी भक्त०
 वार ७ राई मंत्रवी दोइ विचपाणी विछोडा होई ॥ **अथ गोकुल चाला लुका मंत्रः ॥** ओं
 गंगा जमुना सरस्वति तं हं वैठे श्री गोरख ज गंगा जमुना सरस्वति गोरख वावा गोप
 खजतिः तहां मुखन पाके पाव नउं मे गोरख वक्ने पीडा कटे मेरी भक्त गुरु की शक्तः पाराणी
 मंत्रे वार ७ मुख धुर धारोः ॥ **अथ कीडे व्याध मंत्रः ॥** ओं नमो पश्चिम देश वज्री सुर नयी ति
 थेते व्याधी चारी वेतप श्वरगो वैष पत हंगौ चाटी मसे ते पर मन मघवा रसु च कोरा कोरा उपान
 मुख धुर वाअ वडो रोग शिर धुं जे मुख तालन करे गड के पिं चर चर सि गड के पिं डे विध्यान कर
 सीता भक्त मृषी की आज्ञा फुरे मंत्र ईश्वर की वाचः षडाशी मृषी की आज्ञा फुरेः वारा वर सा
 षषशो जतीये गुरु जी वाचा चारी मुखन पाके पावन मटे गोरख वक्ने पीडा कटे गुरु की
 शक्त० पाराणी मंत्र वार ७ पीरो नो देवे गोरोग जावे **पुनः मंत्रः गड के रोग काः ॥** ईश्वर की वे

ऊं
मं. मु.
७

टीबंझकीमालीगंङ्गलेसाई-आवकीउत्तरेहोतौसंतिगुरुगोरथनाथमहादेवकीडुहाईः
मेरीभक्त०॥**अथकीडेगाडगोकामंत्रः॥** वंडेहेठवडोटात्तायातिसकेपैडेहेठमहादेववैठाया
शंयचुडेकीपावडी गलंमोतीकाहारः लंकाजलनेतमीता निसरीलंकालेजुहाथ मीसका
कोठमिठीकीयाईः रुडगरेकीडेगलगईयाईमेरीभक्त० **पुनःमंत्रकीडेकाः॥** गंगाजमुना
सरस्वतीतांहावैठागोरथजति गोरथजतीयेवोईक्यारी तंहाचुगेगऊहमाश पाँकेमुनफाटे
खुरी फुरेमंत्रमहादेवकीवाचाफुरेः **पुनःमंत्रः॥** उंसातमतनिकसातभाई सातोमिलिकेदि
हाई गाडेकीडेवांधोसाई हराहमंतजतितेरीडुहाई रुडेरुडेधोलैतेदुपडे मेरीभक्त० मत
वारगटीमंत्रेकर्कगौन्हेंसाउपरसेकीडेरुडपेव॥ **अथगौकीमांदकोंमंत्रः॥** लुवा-आस
नगुरुदीकाबंधः पाँचैपात्रीदीजेवांधलंवा-आमनवडीध्यान पिंडपानकेपामदिनरांथे
प्राणसूर्यदेवता रातकोरांथेचंद्रमाधर्तिमातासदांथे जिउंफुकोरांथेमातालोहकोठा
लोहकाजीनलोहकाखुरगीन उचासाकोटसमुद्रसीध्याई रोअमन्यागलंधोडचभस्वा रामः॥

भूत होई जाई मेरी भक्त मंत्र पढे वार २९ धार दूध महे सका गुगल धूप दीप जे सवा गज कपडा
 सवा पैसा लोहे की मेथ करणी गौ का दूध अंगुल ९२ रुंड की लकडी ७ वारा २ अंगुल
 की माठी के बिच चारा हे मे गडा वरणी कबी लह सी बंडा वरणी धूणी गाइ महे सना देणी गेट गो
 रय नाथ को देणा कपडा दीजे गो का गे नमो ९॥ अथ मंत्रः॥ ओं गंगा जमुना सरस्वति जं
 हो वैंठे गो रय जति गो रय जती गो रय जती वोई क्यारी तां हां चर काम धनु हमारी अंत गरुष
 वजंत गताडी सवा मगा विष मंडे दिहाडी जितना बावे पीवे तितना ही पचे गो की रक्षा श्री गो रय
 जती करे मंत्र पढे वार ७ गो रय की पूजा करे आदित्य वार मंगल वार के दिन लोभन की जे गो का गे
 गजावे ९॥ इति गो मंत्रः॥ अथ धिशा चदा मंत्रः॥ ओं नमो हनुमंताय किलि शद्वायः भ्रम नाय विध्वं
 मनायः अचल चल गाय ह्रामंत वीर सर्व दोष निवारणायः ह्रामंत वीर की रक्षा फुरेः म
 नत्र पढे वार ७ धूणी देणी मही ॥ ९॥ अथ नोणी नो वन्दना को सस्मों करणा मधारी नो वन्दना ॥
 फेरु फेरु को वल की कलि करुं करुं चुपड डाली विधर्ता भर भर भंडार भर दतना चले मेरा

ॐ
मं० मु०

१८

तेरा धीऊनौणी काकगडे चौरौडा कअलांवा मधाराः अपशा रायपराया आशा
चडे सूर्यछाड सोउ अठ इहथ गुरुकी शक्तः १ **अथ हृदयविण्डेदामंत्रः सरसों**
करगोका॥ उँह विली होर पंचारी की लू डाकणी होर सियारी सतका हृदय विरलन
हारी अकगा मयशा रयेलूगा चमारी गुरुकी शक्त० २ **अथ सरसों करगोदामंत्रः**
उँकाटा काटालो चमकट दूर मुखे मेले मिल शिवशंकर मुखे मेले काल शिवशि
वकर भूत मशारा डाकने ^{आकने} भूचरें चर चौरौ शठ योगराणी गुलि योगवो गंठ १२ देराणी
उँ नार सिंह वीर गोरथ वीर पंचवेताल ह्यारी अज्ञां फुरे ३ **अथ पंचवीर मंत्र सरसों**
धागा चावल करे मंत्र पढे वार ७ उँ पंचवीर पंचवेताल हूम सिधी बंझ कपाल बंझ कप
ले दितीरेष डाकणी शाकणी कीया मिलावा जावडे वीरे दृष्टी पाई भम्म मुंडीया
या पाई मेरी भक्त० १ **अथ सरसों गडीदामंत्रः॥** कालिकालि महाकालि मदे मासे
वियाली चारथाराणी चारपाराणी धरती आकाश चौरौ शिलाय जीव जनि सूर्य

रामः॥

१८

चंद्रपौरा पारंगी गुरुकी शक्त० शिर गंटे गोंठ देगी रक्षा करे **अथ मूर्छा का धारा**
पारंगी करंगी कामंत्रः॥ समुद्र मध्ये दीप दीप मध्ये लंका लंका मध्ये सेता फटक
 सेता फटक ऊपर आदिनाथ वैठा आदिनाथ के हाथ लोहे का गजा लोहे की ग
 जा करी कर सीमार मौच मूर्छा मृगी भार सिवायु हगामंत वीर की अज्ञा फुरे ९
 ठंठंठं फट् स्वाहा गुरुकी शक्त० आदिनाथ की अज्ञा फुरे **अथ बालक नोहे**
लगेति स्का मंत्रः॥ वेहणा सह भागे यांतु स्तन मेरा कहियाः ईस बालक नोहे हा
 उलागी निस्तयो लया भूत प्रेत पिशाची कजो ठरी जाहुं जे इत पिंड रक्षिया तो
 अधापनाथ का पनरा अ गुरुकी शक्त० **अथ बाल डायणी दामंत्रः॥** विसमिल
 आव अंम कहं कल कै पहनेन अधहन मंत रूत विहीन सिवाहा मेरी भक्त०
 विधिः जो वानू ७ पारंगी वडी सवेर ही मगावरा फर इह मंत्र ४५ पेंताली वार पा
 रंगी मंत्रणा फर रकांत कुल्ला दा पारंगी मंत्रणा पारंगी विचरवरा दिन ३ सत

95

२॥ जेजेकरनेतेतेमरतेउलटावेदेतेहिपरपरेः पांचपांडोकी कञ्जथाप अमुकेकी पिंड
 प्राणामासगुदहाडचोमरदरदनरहू मेरीभक्त! पिलीमिकाहकारिमुनशी ओंस्त्रे
 परतीनवारमंत्रपठे १५ **अथजंडीमशाणाका**॥ ओंनमो आदिसगुरुको आदिनाथको
 आदिस चले पवराचले पाणीचले नारसिंहवेठाचले देवभूतचले वविसडाकणी
 चले जोगणीपरचले जंडीमशाणाचले कामगाढूणाचले सिंहराजादूणाचले
 करीयाचले करायाचले जप्पाचले जपायाचले कील्याहोई कीलायाचले
 ठाक्याहोईठकायाचले जलीकियोगनीचले छतिशमशाणाचले हिरकमशाणा
 चले चलेरवावाजोमेरफलानदरुमाचलमारहे तामाईवहूणाकी सजामेपगधरे
 मेरीभक्त० कच्चीलसरीरवापाणी साकलूणा अकारवार १४ वार २९ **अथमशाणा**
कामंत्रः॥ ओंनमो आदिसगुरुको सारकीलीलाहकीपीहणा बांधाचारबुटकाम
 शाणा छलकर छलिइकर ताहूणामंतजतीकी आणा मेरीभक्त० सातवारमंत्र

ॐ
मं.मु.
२०

त्रपंटेकैकरीमंत्रकेसुटेमशागाजाये अथभूतप्रेतबोधैकामंत्रः॥ मिरसोंधागापैनर
गस्वारीदेगा पारममुद्रेमंगलादीप उलंकपारकिनक विलंकापारचुहुउठार चुहु
उठारकापुत्रवीरनारसिंह अपराणीमुद्राधारता हाकगाडकगा चकर चूकरपार
गुरुकीशक्त अथगर्भस्थभजनमंत्र॥ उं ह्रीं श्रीकिरलस्वाहा वार ७ मोलीकेधारेगं
ठ ७ देगी धागासरीरप्रमागामिलला मिरालागा कंठबांधगा प्रसूत होसं जवगंठघा
लेप्रसूत होसं॥ अथयोगिणीदृष्टरक्षाकामंत्रः॥ मिरसोंचातलकरगा समुद्रमध्येयो
गराणी आया भूतंभूतंराणी आये नावे आवेगावे शूलपीडा मुकाईचुकावे उंडडाकणी
मशागावायसी बाटबोटकरसी उर्ध्वह्मांडफुटमरसी गुरुकीशक्त॥ अथमंत्ररक्षाकाः॥
योगिणी पूजाका॥ कालीकालीमहाकाली मिरजेटाववलीवा हाथपांतकरेखवाली हाड
भनीकालजायाई मडेमशागाटूमरजाई पवनभायगीविस्मयानी गुरुकीशक्त॥ मंत्र
रक्षाका॥ ॐ उलंकतनरसिंह पलंकतकाया ताकारननरसिंह बुलाया जोधावेहमकोफि रामः॥

रिपों पिंडदानकी रक्षा श्रीनरसिंहदेवको सेनकवलके यौंभ यौंभ श्रीनरसिंहने लीया
 और भूतप्रेतकी या संहार दक्षिणबंध पश्चिमबंध उत्तरबंध पूर्वबंध बंधधाराकूरो सुरमन्द
 लुपतालबंधा लोहकाकीलीतांवेकी सलाई हनुमानजती परवा श्रीनरसिंह रक्षापाले
 मेरी भक्त गुरु की शक्त मंत्र पढे बार २१॥ पुनः रक्षामंत्रः॥ अगे रये कालिका पड़े रये व
 नदतः दाह गारये हरा मंत वामरथ नरसिंह वज्रका कोट वज्रकी याई जो मेरी रक्षा पि
 उपाशा की ना करे तो दुहाई वदी नाथकी ॥ विधी ॥ चौतर्फ चौकी वठावे कौर नाम अपरांलि
 के रक्षा करे सही ९ अथ मंत्र हाजरातः॥ ॐ जो कुल जाकान मो कुल मान अक्षा गुरु
 महमद शिष्य कौरगाथ के जो न माने महं मद के के लमे की आराति सको लगे गे कर्ज के वा
 गा दावद गुरु तं समिद्धि चेला जंगी हंफ सि होन उपला सह सही दजंगी महादचले हंका
 रे मेकार इचले हंकारे नेई ससा फील चले हंकारे यवरा इचले हंकारे अजराई चले
 हंकारे अमलक मले चले अही यामने हुकम युदाई के नाम मुखक लोहर बलाई हाजर रामः

ॐ
मं.मु.
२९

शब्द २॥ अथ महाजालभाडा ॥ ॐकार आदिकारकरतावेदनहरताचोहेरकसरजनहारः
जुगचारतीनलोगचारवेदपांचपाडो छेभार्ग सातसमुद्र आठदिशा नवग्रह दशरावणः
ग्यारारूडबारामाम तेरातंथोल चोदालंबः पन्नातिथी सोलाकला सत्रासत अठाराता
रजन उनीवलाइ बीसविश्वे चारयाणी चारवाणी पचभूत्तात्मा नौनाथ चौराशीमिद
चौशठयोगणी अष्टकुलीनाग तेतिशक्रोडदेवता चौराशीमहस्वजीउनो आकाशपाता
ल मृतमृत्यमंडलरैनदिनपहर पांडिपल योपलयोमहर्त न्हंतशाकध्वस्तपेतेरेक्षेमा
इमकाकमिंडमोदवदानवभूतप्रेत राक्षस पापपरी आबालविनाशादीठ मूढडायगा
उंकरा मेलमवाली वहेरी उठोरीगधी निनामि बाध थरोला कंयर परवाली वावामी
र नसर अरधंगी दधोरी करोदीनहरुवाडहरुवाजलंधर फुकंभर चरघीआ वादंगी
राविसरीआ आमवान पितीरता पित्तगोला बाहला करुवा कसेली रोगसोग हुक
शूक जानूवा चुडेल सीसी आधामामीकोटक हनूवामृगी पिनस वायजुरी लोहवलाभ रामः॥

आमगडंवफोडा जिगरचोटपेट रुदि रुदला रुहलाय पौष्पनदीनाले घरवाह हंस
 सकास कोणाअरमास हाडगुद मुंडनासिकानाटिका चोनीलवाय वुरनामिनजरतप
 वलसिर भगंदर सिलेमान विन्दहाड अल्ह सिलेमान तहांजातक सवालाय पिकव
 रकीथायनाजलर भस्मंतहोर दादेआदमकीशक्ती शेषसर्पअहि आमनेदीकीभक्ती
 मेरीभक्तीफुरोमंत्रइश्वरकीवाचापुरे कालाहसेनिर्मलावसेसमुडानीरपंथपसारः विषह
 रमलकरेसरीर॥ इति सर्वदुष्टमंत्रः अथ चितामणीमंत्रः॥ ॐ नमो अग्रतिह तिवंलवीथी
 पशकमेदिनकर सरुस्ववाहया भूतवेताल यक्ष राक्षस स्कंद विनायक ग्रहदेव यद्वालुग्र
 ह अष्टग्रह दह २ हन २ फ्य २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंसय विद्धविध्वंसय विद्राव्येभोभोति
 तामणीमहाविद्या पठितसिद्ध महाविद्या मथ विनायदीजी रकाहीकंच दक्षिकंच चा
 हीकंच चतुर्थकंच महूर्तकंच मामाधिमासासिक यशमासीकं दिनज्वर पित्तज्वर
 रातृज्वर संध्याज्वर वातज्वर पित्तज्वर दाहज्वर श्लेष्मज्वर संज्ञिपातज्वर

ॐ
मं.मु.
२२

सीतज्ज्वा रातश्च शिरोत्यश्च हन २ त्रिशूलेन हन २ चक्रशूलेनो हन २ पादुशूलेनो हन २
कुंभकामिनी सर्वेषां विनाशनि ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
राजी जांभवाय्य स्थं भनी मोहनी काला रात्री नीर सिंहे स्या सिंहे चलु चलः ठः ठः ठः ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्री श्री फुं फुं रं रं ह्रीं ह्रीं फुं माये परम माहामदनी हतमनिधो मेरु ह्यथाया हिम
क्षर २ अमुक सर्वभूतमेया पद्वेभ्यो स्वाहा ९ इति चिंतामणी विद्याः शुभम् मस्तु भूः

कुंकमगोराचनस्य यस्य नामा लि
य शीर्षं वधयेत् सर्वग्रहय
दागक्ष स उक्तिनी शा कि
नामः जं नी स्वरदाया नश्यति
जं सर्वपदवा साम्य
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
तिः शत्रुनाश
तिः

वा षट्जुं देवदत्तरक्षवा
वद
गाराचनाक्षनाभूर्य लिष्यज
लम्याप्य प्रत्यहं पुष्ये पूजये
त् भर्तिर्भवतिः

रामः॥

२२